भोगवादी संस्कृति के नुकसान

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

भारतीय संस्कृति अध्यात्म प्रधान संस्कृति है। इस संस्कृति में भोगवाद को महत्व नहीं दिया गया है। भोगवाद का तात्पर्य है– इन्द्रिय सुख तक सीमित रह जाना। हमारी संस्कृति में इन्द्रिय जगत से परे परमार्थ जगत की चेतना को जागृत करके आत्मतत्व को जानने का उपदेश दिया गया है। प्रायः रोटी, कपड़ा, मकान, शिक्षा और चिकित्सा सभी मनुष्यों के लिए आवश्यक है। भोगवादी संस्कृति इन्द्रिय सुख से सम्बन्धित है। भारतीय संस्कृति आध्यात्मिक सुख से सम्बन्धित है। भोगवाद इन्द्रिय सुख को महत्व देता है। इस स्तर पर मानव और पशु में कोई अन्तर नहीं है। पशु भी इन्द्रिय सुख का अनुभव करता है। पाश्चात्य संस्कृति भोगवादी संस्कृति है। वहां पर खाओ पिओ और मस्त रहो को महत्व दिया जाता है। हमारी भारतीय संस्कृति में खाना–पीना, मस्त रहना कोई महत्व नहीं रखता। भोगवादी संस्कृति रोग और बीमारियों को बढ़ाती है। शहरों में इसी संस्कृति का प्रचलन है। बड़े–बड़े उपभोक्ता भंडारों में आकर्षक समान भरे पड़े रहते है। जब ग्राहक वहां जाता है तो आवश्यकता न रहने पर भी उन समानों की तरफ आकर्षित होता है और आवश्यक–अनावश्यक सभी वस्तुओं की खरीददारी करता है। वहां पर वस्तुओं की साज–सज्जा और रखने का ढ़ंग इस प्रकार से रहता है कि उनकी तरफ इन्द्रियां स्वयं ही आकर्षित हो जाती हैं। यह प्रचलन पाश्चात्य संस्कृति का अनुकरण है। आज से बीस तीस वर्ष पहले उपभोक्ता भंडारों का प्रचलन नहीं था। सड़कों के किनारे या बाजारों में दुकाने लगी रहती थी। ग्राहक वहां जाकर अपनी आवश्यकता के अनुसार ही वस्तुएं खरीददता था। जितनी आवश्यकता होती थी उतना ही सामान खरीदा जाता था। आज के नये युग में वस्तुओं की भरमार है। लोग गुणवत्ता पर नहीं आकर्षण पर ज्यादा ध्यान देते है। बाजारे चीनी सामानों से भरी पड़ी है। चीन के बने हुए सामान सस्ते तो होते है किन्तु टिकाऊं नहीं होते। कुछ समान तो ऐसे होते हैं कि एक बार के प्रयोग के बाद टूट–फूटकर बिखर जाते है। केवल पैसे का अपव्यय हो रहा है। कास्मेटिक और इस तरह के अन्य पदार्थों की भरमार इन भंडारों में रहती है। ऐसे समान पशुओं की हत्या करके उनके चर्बी

के उपयोग से बनते है। इन वस्तुओं के निर्माण में जीव हिंसा होती है। ये पदार्थ कैसे बनते हैं, उपभोक्ताओं को इसका ज्ञान नहीं होता। इसलिए इसका प्रयोग करते रहते है। जितने भी पेय पदार्थ हैं, खाद्य पदार्थ हैं या उपभोग के अन्य पदार्थ हैं इन उपभोक्ता भंडारों में महंगे दामों में उपलब्ध होते है। आजकल इन उपभोक्ता भंडारों से सामान खरीदना एक फैशन बन हो गया है। जिनके पास अधिक पैसा है वे तो वहां सामान खरीदते हैं उन्हीं को देखकर जो कम पैसे वाले हैं वे भी इन्हीं भंडारों से सामान खरीदते है। इसके कारण धन का नुकसान हो रहा है। बड़े–बड़े उपभोक्ता भंडार विदेशी कम्पनियों के है। ये कम्पनियां जिस देश में जाती हैं, उनका एकमात्र उद्देश्य धन की उगाही करना होता है। विकासशील या अल्पविकसित देशों में ये कम्पनियां खूब शोषण कर रही है। इन भंडारों में एक ही छत के नीचें प्रायः उपभोग की सभी वस्तुएं इकट्ठा मिल जाती है, इसीलिए ग्राहक भी इनकी तरफ अधिक आकर्षित होते है। व्यक्ति की आवश्यकताएं सीमित है। एक व्यक्ति को पहनने के लिए दो–तीन जोड़ी वस्त्र, खाने के लिए भोजन, पीने के लिए पानी, पढ़ने के लिए विद्यालय और चिकित्सा यही मानव की आवश्यकता है। किन्तु आजकल बड़े–बड़े घरों के बच्चे–बच्चियां, लड़के–लड़कियां, स्त्रियां इतना सामान खरीदती है कि पहले के जमाने में जितना एक दुकान में नहीं रहता था। यह संग्रह की प्रवृत्ति उपभोक्तावाद को बढ़ावा दे रही है, साथ ही साथ प्रदर्शन की प्रवृत्ति भी बढ़ रही है। भोगवादी संस्कृति विज्ञापनों की संस्कृति है। विज्ञापनों के चक्कर में फंसकर आज की युवा पीढ़ी दिग्भ्रमित होती जा रही है। विज्ञापनों को देख–देखकरके ग्राहक यह नहीं समझ पाता की उसकी आवश्यकता क्या–क्या है? विज्ञापन इतने आकर्षक होते हैं जिससे ग्राहक वस्तुओं की तरफ आकर्षित होता है। शरीर पंचभौतिक तत्वों से मिलकर बना है। इसे योग के अनुशासन से ठीक रखा जा सकता है। आजकल विज्ञापनों के चक्कर में सौन्दर्य प्रसाधनों तथा स्वास्थ्य वर्धक पेय पदार्थों के नाम पर रासायनिक मिश्रणों का उपयोग करके उपभोक्ता के स्वास्थ्य के साथ खिलवाड़ किया जा रहा है। जितने भी कास्मेटिक वस्तुएं है, ये त्वचा के लिए बहुत हानिकार होती है। इनका उपयोग करने से त्वचा काली हो जाती है और अनेक प्रकार के त्वचा के रोग होने लगते है। त्वचा के लिए प्राकृतिक वस्तुओं का उपभोग ज्यादा अच्छा होता है। भोगवाद से लाभ और हानि दोनों है। कुछ लोग भोगवाद को पूरी तरह त्याज्य

बताते है लेकिन कुछ लोग भोगवाद की दौड़ में ही मस्त है। भोगवाद से देश की अर्थव्यवस्था में कुछ सुधार हुआ है। नयी–नयी वस्तुओं का उत्पादन भोगवाद की ही देन है। अच्छी–अच्छी कारें, स्कूटर, रंगीन टी.वी. तथा चर–अचर, दूरभाष, दूरसंचार सुविधाएं रैफ्रिजरेटर, कम्प्युटर, इंटरनेट, कपड़े, जूते, शानदार पंचसितारा, राजसी महल तथा फास्टफूड जाइंट्स आदि प्रगति के पैमाने हो गये है। जब भोग निश्चित ही जीवन के लिए नितान्त आवश्यक है, तब कोई मनुष्य इस भोगवाद की प्रशंसा की करेगा। भारतीय दृष्टि से इसका उतना महत्व नहीं है, जितना अध्यात्मवाद का है। भारतीय जीवन दृष्टि संयम की दृष्टि है। यहां सादा जीवन और उच्च विचार को महत्व दिया जाता है।